संपादकीय

फिर ना हो ऐसा हादसा

नए साल के पहले दिन जम्मू स्थित वैष्णो देवी मंदिर में मची भगदड़ के कारण हुई 12 श्रद्धालुओं की मौत विचलित करने वाली है। हालांकि घायलों को तत्काल हॉस्पिटल पहुंचाने की व्यवस्था हुई। मृतकों के परिजनों और घायलों के लिए मुआवजे का एलान भी तुरंत कर दिया गया। लेकिन फिर भी यह देखना जरूरी है कि आखिर इस तरह की घटना हो कैसे गई।

वैष्णो देवी मंदिर देश के प्रमुख आस्था केंद्रों में है, जहां देश भर से श्रद्धालु बड़ी संख्या में पहुंचते हैं। यहां की व्यवस्था को दूसरे तीर्थस्थलों के लिए आदर्श बताया जाता रहा है। इसलिए यह दुर्घटना और भी बड़ी हो जाती है। हादसे के बाद शुरुआती स्पष्टीकरण में कहा गया कि खास त्योहारों के मौकों पर तो मंदिर में श्रद्धालुओं की संख्या में इजाफा होता रहा है। पिछले कुछ वर्षों से युवाओं की अच्छी-खासी तादाद नए साल के मौके पर भी वैष्णो देवी और अन्य मंदिरों में जाने लगी है। इसी क्रम में इस साल वैष्णो देवी मंदिर पहुंचने वाले भक्तों की संख्या अप्रत्याशित रूप से बढ़ जाने से समस्या हुई। लेकिन श्राइन बोर्ड के ही आंकड़ों के मुताबिक 31 दिसंबर और 1 जनवरी को 35 हजार श्रद्धालुओं को ही दर्शन की इजाजत दी गई थी, जो 50,000 की निर्धारित सीमा से काफी कम थी।ऐसे में सामान्य स्थिति में भीड़ प्रबंधन कोई मुश्किल काम नहीं होना चाहिए था। कहा जा रहा है कि संभवत: युवा श्रद्धालुओं के दो समूहों में किसी बात को लेकर विवाद हो गया था। कुछ प्रत्यक्षदर्शियों ने मीडिया को बताया कि वहां मौजूद पुलिसकर्मियों की तरफ से शक्ति प्रयोग से भी हालात बिगड़े। बहरहाल, इस तरह टुकड़ों में आए तथ्यों और अपुष्ट बयानों के आधार पर कोई निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता। निष्पक्ष और विश्वसनीय जांच से ही पूरी स्थिति सामने आएगी। यह अच्छी बात है कि जम्मू-कश्मीर के लेफ्टिनेंट गवर्नर की तरफ से तत्काल दुर्घटना के कारणों का पता लगाने के लिए जांच की घोषणा कर दी गई। इस समिति को एक सप्ताह के अंदर ही अपनी रिपोर्ट देनी है।लेकिन घटना के बाद स्थानीय निवासियों की ओर से किए गए विरोध प्रदर्शन में यह आशंका जताई गई कि लेफ्टिनेंट गवर्नर की ओर से गठित जांच समिति मंदिर प्रबंधन की भूमिका की ढंग से जांच नहीं कर पाएगी और इसीलिए सीबीआई जैसी सेंट्रल एजेंसी से इस मामले की जांच करवाई जानी चाहिए। बहरहाल, ऐसे बयानों के पीछे अक्सर लोकल समीकरणों की भी भूमिका होती है, इसलिए इसे एक हद से ज्यादा अहमियत नहीं दी जा सकती, लेकिन इससे जांच समिति की चुनौतियां जरूर बढ़ गई हैं। उसे यह सुनिश्चित करना होगा कि जांच के दौरान सभी महत्वपूर्ण पहलुओं पर रोशनी पड़े और सभी प्रासंगिक सवालों के संतोषजनक जवाब तलाशे जाएं। तभी इस भगदड़ के लिए जिम्मेदार स्थितियों की सही तस्वीर सामने आएगी और यह सुनिश्चित किया जा सकेगा कि आगे कभी ऐसी घटना न हो।

छत्तीसगढ़ के छत्तीस माह कांटों की राह में विकास की चाह

कमलज्योति

अविभाजित मध्यप्रदेश के समय धान का कटोरा कहलाने वाला हमारा छत्तीसगढ़ जब से अलग राज्य के रूप में अस्तित्व में आया है, विकास की नित नई सीढियां चढ़ रहा है। विकास के इस उतार चढ़ाव में छत्तीसगढ़ के किसान, गरीब और मजदूर राज्य बनने के वर्षों बाद भी जहाँ जैसे थे वही क्यों रह गए? शायद इन सवालों का जवाब किसान और मजदूर ही दे पाएंगे।

सभी मानते हैं कि विकास हुए। सड़कें बनीं, भवन बने, लेकिन क्या हम सबका सपना यही था कि राज्य बनने के बाद हमारा छत्तीसगढ़ महानगरों की तरह विकसित हो ? जी नहीं.. दरअसल छत्तीसगढ़ राज्य बनने और बनाने के पीछे यहाँ की माटी से जुड़े सभी लोगों का सपना था कि वे अपने स्वाभिमान और आत्मसम्मान के साथ अपने राज्य में रह सकें। यहाँ रहने वाले किसानों का सपना था कि उन्हें उनकी मेहनत का सही दाम मिले। मजदूर हो या गरीब सबके मन में छत्तीसगढ़ राज्य के साथ एक अटूट विश्वास भी था कि सत्ता सम्हालने वाली सरकारें उनके साथ भेदभाव न करें और उन्हें आत्मसम्मान के साथ जीवन जीने में मदद करते हुए सुख-दुख की साथी बनें। यहाँ रहने वाले अनुसूचित जनजातियों, अनुसूचित जातियों और पिछड़ा वर्ग सहित सभी समाज के लोगों को साथ लेकर चले। सैकड़ों सपनों के साथ बने छत्तीसगढ़ राज्य में छत्तीसगढ़ियों ने नई सरकार को सत्ता पर बिठाया। 17 दिसंबर 2018 को जब नई सरकार ने शपथ ली तो श्री भूपेश बघेल मुख्यमंत्री बने। एक किसान और जमीन से जुड़े ऐसे जुझारू नेता के मुख्यमंत्री पद पर आसीन होने से उनकी किसानी छवि से ज्यादा उनका आक्रामक स्वभाव हमेशा विरोधियों के लिये एक कांटे के जैसा बना रहा। वे छत्तीसगढ़ियों के भीतर मौजूद ठेठ छत्तीसगढ़िया का वह भाव और छत्तीसगढ़ की परम्परा, संस्कृति, जो आधुनिक विकास और समय की चकाचौंध में कही गुम हो गयी थी, उन्हें पुनर्जीवित करना चाहते थे। वे जानते थे कि छत्तीसगढ़ का विकास बिना यहां के गरीबों, किसानों और मजदूरों को ऊपर उठाए बिना संभव ही नहीं है। वे जानते थे कि हमारे राज्य के किसान वर्षों से कर्ज में डूबे हुए हैं। धान का बेहतहाशा उत्पादन करने के बाद भी उत्पादन का सही मूल्य उन्हें नहीं मिल पा रहा है। राज्य के किसान खेती किसानी में हो रहे नुकसान की वजह से खेत बेचने में लगे हैं। वे किसानी छोड़ मजदूर बनते जा रहे हैं। गांव से परिवार बिखर रहा है। बाहर के प्रदेश जाकर किसान मजदूर बनते जा रहे हैं और राज्य की परम्परा, संस्कृति भी बिखर रही है। श्री भूपेश बघेल के मन में यह सभी बातें रही होंगी। शायद यहीं वजह है कि छत्तीसगढ़ का मुख्यमंत्री बनते ही उन्होंने किसानों के मर्म को समझा और किसी तरह का दबाव नहीं होने के बावजूद भी कुर्सी पर बैठते ही 18 लाख से अधिक किसानों का 9 हजार करोड़ रुपए ऋण माफी का, दूसरा 2500 रुपये धान खरीदी का फिर लोहंडीगुड़ा में आदिवासियों की जमीन

वापसी का फैसला लिया। उन्होंने सिंचाई कर माफ करते हुए बिजली बिल भी आधा कर सभी वर्गों को बड़ी राहत पहुचाई।

किसान हित में लिया गया यह छत्तीसगढ़ सरकार का बड़ा नीतिगत निर्णय था, लेकिन इस निर्णय के विरूद्ध कुछ ऐसे कांटों की राह बिछा दी गई कि जिस पर चलना यानी छत्तीसगढ़ को एक बड़ा नुकसान उठाना था। यह एक चुनौती जैसी थी, फिर भी मुख्यमंत्री श्री बघेल ने संयम और सूझबूझ दिखाते हुए किसानों के हित में आगे कदम बढ़ाया। वे चाहते तो किसानों को लाभान्वित करने की बजाय केंद्र के नियमों का हवाला देकर कई हजार करोड़ रूपये बचा लेते, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। मुख्यमंत्री ने राजीव गांधी किसान न्याय योजना बनाई। उनकी नरवा, गरवा, घुरवा, बारी जैसी योजनाएं किसी फलदार वृक्ष की तरह प्रदेश के हर जिलें-हर गांव में अंकुरित होने लगी। गोधन न्याय योजना से रोजगार और पर्यावरण, पशु संरक्षण को नई दिशा मिली।

मुख्यमंत्री श्री बघेल के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ विकास की राह में तब भी पूरी गति से चलायमान था, जब विश्वव्यापी कोरोना के कहर से पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था कराह रही थी। स्वास्थ्य सुविधाओं को बेहतर बनाने के साथ कोरोना से निपटने की हर संभव कोशिश की गई। पहली और दूसरी लहर में उपजे संकट को दूर करने में सरकार ने कई अहम फैसले लिए। यह वह समय था, जब लॉकडाउन होने से किसानों के पास पैसों का संकट उठ खड़ा हुआ। इस विपरीत समय में भी मुख्यमंत्री ने राजीव गांधी न्याय योजना और गोधन न्याय योजना के माध्यम से किसानों और गौ-पालकों की जेब में पैसे डाले और वनोपज संग्रहण, मनरेगा से समय पर राशि भुगतान कर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाकर छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था को गतिशील बनाए रखा। कोविडकाल में राज्य में उपचार हेतु मेडिकल उपकरणों के उत्पादन को प्राथमिकता के साथ कोविड प्रबंधन हो या बाहर से आने वाले मजदूरों को सुरक्षित घर तक पहुंचाने का काम, मुख्यमंत्री ने यहां भी अपनी दक्षता साबित की। उन्होंने परिवारों के लिए नि:शुल्क राशन की व्यवस्था सुनिश्चित की। स्कूल बंद होने पर पढ़ई तुंहर दुआर के माध्यम से ऑनलाइन शिक्षा जारी रख विद्यार्थियों को तनाव से उबारा। कोविडकाल में मृत कर्मचारियों के आश्रितों को अनुकंपा नियुक्ति देने नियमों को शिथिल किया।ऐसा नहीं कि उन्होंने सिर्फ किसानों, गौ-पालकों के लिये ही सबकुछ किया। वनवासियों के लिए भी बड़े कदम उठाये। वन अधिकार पत्र देने के साथ वनोपज संग्रहण, तेंदूपत्ता समर्थन मूल्य में इजाफा कर सुदूरवर्ती क्षेत्रों के लोगों के लिए भी आर्थिक संबलता के द्वार खोले। कृषि ऋण माफी, सिंचाई कर माफी के अलावा सिंचाई क्षमता दोगुना करने की पहल की और बोध घाट सिंचाई परियोजना सहित कई बड़ी परियोजनाओं, एनीकट, व्यपवर्तन योजनाओं पर भी अपना ध्यान केन्द्रित किया। उन्होंने गरीबों को लक्ष्य बनाकर उनसे जुड़ी योजनाएं बनाई और राज्य के विकास में इन योजनाओं को महत्वपूर्ण माना। राज्य में संचालित मुख्यमंत्री शहरी स्लम स्वास्थ्य योजना, दाई-दीदी क्लीनिक, मुख्यमंत्री हाट बाजार क्लीनिक योजना, स्वामी आत्मानंद इंग्लिश मीडियम स्कूल योजना, मुख्यमंत्री वार्ड कार्यालय योजना, छत्तीसगढ़ महतारी दुलार योजना, पौनी-पसारी योजना, मुख्यमंत्री सुगम सड़क योजना, शहीद महेंद्र कर्मा तेंदूपत्ता संग्राहक सामाजिक सुरक्षा योजना, धरसा विकास योजना, मुख्यमंत्री वृक्षारोपण प्रोत्साहन योजना, मुख्यमंत्री सुपोषण अभियान, शहरी गरीबों को पट्टा एवं आवास, ई.पंजीयन, रामवनगमन पर्यटन परिपथ का विकास, प्रशासनिक विकेन्द्रीकरण और पिछड़े अंचलों के विकास के लिए पांच नए जिले का निर्माण, अनेक नई तहसीलों के गठन, आदिवासियों के विरूद्ध दर्ज प्रकरणों की वापसी, चिटफंड कंपनियों के खिलाफ कार्रवाई कर निवेशकों का पैसा वापस कराने सहित राष्ट्रीय स्तर पर राज्य की संस्कृति को बढ़ावा देने आदिवासी नृत्य महोत्सव का आयोजन किया। मुख्यमंत्री श्री बघेल छत्तीसगढ़ की संस्कृति, परम्परा के बड़े संरक्षक व संवाहक साबित हुए। उन्होंने तीज-त्यौहारों से लेकर यहा की सांस्कृतिक विरासत को भी अक्षुण्ण बनाये रखने की दिशा में काम किया। सार्वजनिक अवकाश घोषित कर सभी को अपने पर्व से जुड़े रहने का अवसर दिया। अधोसंरचना से जुड़े कार्यों शासकीय भवनों, सड़कों और पुलों के निर्माण कार्य भी कराए। उन्होंने गौठानों के माध्यम से स्व-सहायता समूहों को आर्थिक रूप से और भी सशक्त बनाने की दिशा में काम किया। उनके द्वारा बनाए गए उत्पादों को सी-मार्ट सहित अन्य बाजार उपलब्ध कराने के साथ कर्ज में दबे महिला समूहों के कर्ज भी माफ किया। छत्तीसगढ़ से कुपोषण मिटाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली वह चाहे आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, सहायिका हो या फिर छत्तीसगढ़ को स्वच्छ बनाने वाली स्वच्छता दीदी, मुख्यमंत्री ने उनका मानदेय बढ़ाकर उनका मनोबल बढ़ाया।

अनुभवी मिसरी को बड़ी जिम्मेदारी

अरुण नैथानी

जिस शख्स ने देश के तीन प्रधानमंत्रियों के निजी सचिव के रूप में यूरोप, अफ्रीका व उत्तरी अमेरिका में भारतीय मिशनों में तथा चीन के साथ सबसे मुश्किल समय में चुनौतिपूर्ण भूमिका निभाई हो, उस व्यक्ति को राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी देना निस्संदेह तार्किक ही है। हाल में चीन में राजदूत के दायित्वों से मुक्त होने के बाद विक्रम मिसरी को उपराष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार यानी डिप्टी एनएसए बनाया जाना उनकी क्षमता व अनुभव का बेहतर उपयोग ही कहा जायेगा। खासकर राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल की टीम को ऐसे वक्त में मदद मिलेगी, जब चीन से भारत के रिश्ते इतिहास के सबसे जटिल दौर में पहुंच चुके हैं। बेहद टकराव भरे समय में चीन में राजदूत के रूप में उनके तीन साल के कार्यकाल का अनुभव भविष्य की कूटनीतिक रणनीति बनाने में निस्संदेह सहायक ही होगा। दरअसल, मिसरी वर्तमान डिप्टी एनएसए पंकज सरन का स्थान लेंगे, जो आज अपने पद से सेवानिवृत्त हो रहे हैं। पंकज सरन इससे पहले रूस व बांग्लादेश में भारतीय मिशन की जिम्मेदारी संभाल चुके हैं। चीन में राजदूत के रूप में मिसरी की पारी कितनी महत्वपूर्ण रही है, यह इस बात से पता चलता है कि उनके विदाई कार्यक्रम में चीन के विदेश मंत्री वांग यी ने भाग लिया और उनके कार्यकाल के दौरान भूमिका को सराहा।

सात नवंबर, 1964 को कश्मीर स्थित श्रीनगर में जन्मे विक्रम मिसरी वर्ष 1989 बैच के भारतीय विदेश सेवा के अधिकारी हैं। प्रारंभिक शिक्षा सिंधिया स्कूल से करने के बाद दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदू कालेज से स्नातक की पढ़ाई पूरी की। कालांतर उन्होंने एमबीए की डिग्री भी हासिल की। इसके बाद तीन साल तक विज्ञापन व विज्ञापन फिल्म निर्माण के क्षेत्र में कार्य भी किया। वे केंद्र सरकार में विदेश मंत्रालय में अंडर सेक्रेटरी से लेकर निदेशक तक का दायित्व संभाल चुके हैं। उन्होंने देश के तीन प्रधानमंत्रियों का विश्वास हासिल किया। उन्होंने वर्ष 1997 से मार्च, 1998

तक प्रधानमंत्री इंद्र कुमार गुजराल के, अक्तूबर, 2012 से मई, 2014 तक प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह तथा वर्ष 2014 में मई से जुलाई तक प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के निजी सचिव के रूप में काम किया।

मिसरी को वर्ष 2018 में चीन का राजदूत बनाया गया। इसके बाद का समय दोनों देशों के बीच बेहद टकरावभरा रहा है। जिसका चरम लद्दाख की गलवान घाटी में भारत-चीन के सैनिकों के बीच खूनी संघर्ष के रूप में सामने आया। जिसमें दोनों तरफ के सैनिकों की क्षति हुई। जिसके चलते कूटनीतिक संबंध बेहद खराब दौर में पहुंच गये। ऐसे मुश्किल वक्त में दोनों देशों के बीच हुई बातचीत में मिसरी की महत्वपूर्ण भूमिका रही। वे लगातार चीनी पक्ष को स्मरण कराते रहे हैं कि दोनों देशों के बीच मौजूदा दौर चुनौतीपूर्ण जरूर है, लेकिन ये संबंध बेहद संभावना भरे भी हैं। साथ ही राजनीतिक, कूटनीतिक व सैन्य वार्ताओं को रास्ता निकालने में सहायक बताया।भारत में नवंबर, 2019 में जब महाबलीपुरम में भारत व चीन के शिखर सम्मेलन में चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने भाग लिया तो उस महत्वपूर्ण दौर में मिसरी ने चीन में राजदूत के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। इन कूटनीतिक चुनौतियों के अलावा वर्ष 2019 की समाप्ति पर जब कोरोना महामारी ने चीन से निकलकर पूरी दुनिया में कोहराम मचाया तो भारतीय राजदूत के रूप में उन्होंने बेहद चुनौतीपूर्ण समय का मुकाबला किया। एक ओर जहां व्यापारिक रिश्ते बाधित हुए और दवाओं से जुड़ी कच्ची सामग्री समेत आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति में बाधा आई तो मिसरी की भूमिका महत्वपूर्ण हो गई। इसके अलावा भारतीय नागरिकों के आवागमन के अलावा चीन में पढ़ने वाले करीब ढाई हजार छात्रों के भारत में फंसने का संकट भी सामने था। इस समस्याओं के निदान में उन्होंने रचनात्मक भूमिका निभाई।निस्संदेह, भारत-चीन के रिश्ते सामान्य करने में उनका पिछला अनुभव काम आयेगा। हालांकि, अनुभवी राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल की टीम में दो अन्य उपराष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार राजेंद्र खन्ना और दत्ता पंडसालगिकर पहले ही काम कर रहे हैं। निस्संदेह, ऐसे में प्रधानमंत्री कार्यालय में काम करने का उनका अनुभव काम आयेगा। निस्संदेह, एक अनुभवी राजनयिक विक्रम मिसरी की नयी पारी का लाभ देश को मिलेगा।बदले हुए भू-सामरिक परिदृश्य में भारत व चीन के बीच संबंध सामान्य करना भारत की प्राथमिकता है। हालांकि, रूस से करीब होते रिश्ते देश का संबल बढ़ाने वाले हैं, लेकिन भौगोलिक रूप से चीन हमारा पड़ोसी है, हमारे व्यापारिक हित आपस में जुड़े हैं। ऐसे में जून, 2020 में लद्दाख की गलवान घाटी की घटना व सीमा पर बना तनाव कम करने में मिसरी की भूमिका का लाभ भविष्य की रणनीति को तैयार में मददगार होगा क्योंकि मिसरी इन वार्ताओं का हिस्सा रहे हैं। ऐसे में चीनी मामलों की विशेषज्ञ की देश को जरूरत भी थी, क्योंकि इस मुश्किल वक्त में मिसरी लगातार चीनी विदेश मंत्रालय के संपर्क में रहे थे। जिसके बाद सैन्य व कूटनीतिक वार्ताओं के बाद कुछ इलाकों से चीनी सेना की वापसी हुई। इसके अलावा विक्रम मिसरी को हिंद प्रशांत क्षेत्र के मामलों में एक कुशल रणनीतिकार माना जाता है।

चुनावी वेला में कोरोना का खेला

सहीराम

नए साल पर बधाइयां और शुभकामनाएं देने का रिवाज है, सो आपको भी बधाई और बहुत-बहुत शुभकामनाएं। हालांकि कुछ लोग इसी बात पर नाराज हो सकते हैं कि यह नया साल तो विदेशी परंपरा का है। बहरहाल, इस बात पर तो खुश नहीं हुआ जा सकता कि नए साल के साथ कोरोना का नया वेरियंट फ्री मिला है। हालांकि, हमारे यहां ऐसा कहने वालों की कोई कमी नहीं कि लोग तो मुफ्त का बुखार भी नहीं छोड़ते। हो सकता है यह शॉपिंग के शौकीनों और छूट के आदियों के लिए सच भी हो। लेकिन यह कोरोना चुनाव के समय ही क्यों आता है जी? पिछले वर्ष जब बंगाल वगैरह का चुनाव था, तब आया और अब जब पंजाब और यूपी के चुनाव सामने हैं तो यह फिर आ गया। जाहिर है यह चुनावों के वक्त मिलने वाली मुफ्त शराब या मुर्गे के लिए तो आया नहीं होगा। यह मुफ्त की साड़ी और बिंदी के लिए भी नहीं आया होगा। यह अखबारों में रोज छप रहे इस या उस राज्य के विकास की जानकारी लेने भी नहीं आया होगा, क्योंकि आखिर तो लोगों को भी अपने यहां के विकास की जानकारी इन्हीं विज्ञापनों से मिलती है। वरना हकीकत में विकास कहां देखने को मिलता है। तब फिर इसे क्या लगता है कि चुनाव के वक्त बड़ी-बड़ी रैलियां होंगी तो ज्यादा शिकार मिलेंगे। लेकिन इसे यह समझ लेना चाहिए कि भैया तुम्हारे नए-नए रूप बदलने से तो चुनाव रुकने वाले हैं नहीं। न ही नेता रैलियां करना छोड़ेंगे। ज्यादा से ज्यादा क्या होगा- गंगा में लाशें तैरेंगी या फिर उसकी रेती में दबी हुई मिलेंगी। श्मशानों में लाइन लगेगी। सॉरी कब्रिस्तानों का नाम लेना भी जरूरी है, वरना यही विवाद हो जाएगा। ज्यादा से ज्यादा क्या होगा कि लोग ऑक्सीजन के लिए तड़पेंगे। तो भैया लोगों को तो तड़पना ही है। वे रोजगार के लिए तड़पते हैं। वे रोटी के लिए तड़पते हैं। तो इलाज के लिए भी तड़प लेंगे। वे तड़पेंगे, सिर्फ इसलिए तो नेता वोट बटोरना बंद नहीं कर देंगे न। हां, थोड़ी-बहुत तोहमत सहनी पड़ेगी तो चलता है यार। थोड़े दिन में लोग भूल जाते हैं। न पिछला चुनाव याद रहता है, न उसके वादे याद रहते हैं।

दलों-नेताओं का भविष्य भी बतायेगा नव वर्ष

राजकुमार सिंह

चुनाव होते तो हैं, भावी सरकार चुनने के लिए, पर और भी बहुत कुछ तय कर जाते हैं। फिर वर्ष 2022 की तो शुरुआत ही नहीं, समापन भी कुछ महत्वपूर्ण राज्यों के विधानसभा चुनाव से होगा। ऐसे में आश्चर्य नहीं कि नव वर्ष न सिर्फ राजनीतिक दलों की दिशा, बल्कि कुछ नेताओं का भविष्य भी बतायेगा। फरवरी-मार्च में संभावित पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों को वर्ष 2024 का सेमीफाइनल भी माना जा रहा है तो इसके दो अहम कारण हैं ¬ पहला, इन राज्यों में लोकसभा में सर्वाधिक 80 सांसद भेजनेवाला उत्तर प्रदेश भी शामिल है, जिसने लगातार दो लोकसभा चुनाव में भाजपा को स्पष्ट बहुमत दिलवाने में निर्णायक भूमिका निभायी है। दूसरा, इन राज्यों में पंजाब और उत्तराखंड भी शामिल हैं, जिनमें से पहले राज्य में कांग्रेस की सरकार है, तो दूसरे में वह भाजपा से सत्ता छीनने की प्रबल दावेदार है। बेशक उत्तर प्रदेश और गोवा में भी कांग्रेस के चुनावी प्रदर्शन पर निगाहें रहेंगी, लेकिन पंजाब और उत्तराखंड में प्रदर्शन उसकी दिशा भी तय करेगा। अपने ऐतिहासिक पराभव काल से गुजर रही देश की इस सबसे पुरानी पार्टी के राष्ट्रीय नेतृत्व का फैसला भी इसी साल होना है। चुनावी परीक्षाओं में लगातार विफलता वाले दल का पुन¬ नेतृत्व संभालने से राहुल गांधी का न तो मनोबल ऊंचा होगा और न ही वरिष्ठ नेताओं में उनकी स्वीकार्यता बढ़ेगी।

अगर बड़बोले नवजोत सिंह सिद्धू के समक्ष समर्पण करने और मुख्यमंत्री पद पर दलित कार्ड चलने के बाद भी कांग्रेस सीमावर्ती राज्य पंजाब में सत्ता बरकरार नहीं रख पाती है तो उससे हिमाचल प्रदेश और हरियाणा में भी उसकी संभावनाओं पर नकारात्मक असर ही पड़ेगा, जहां क्रमश¬ 2022 और 24 के अंत में विधानसभा चुनाव होने हैं। कुछ समय पहले तक पंजाब विधानसभा चुनाव में कांग्रेस-आप और अकाली-बसपा गठबंधन के बीच त्रिकोणीय मुकाबले की संभावना जतायी जा रही थी। त्रिकोणीय मुकाबले में कांग्रेस का पलड़ा भी भारी माना जा रहा था, लेकिन मुख्यमंत्री पद से कैप्टन अमरेंद्र सिंह की बेआबरू विदाई और फिर अंतत¬ तीन विवादास्पद कृषि कानूनों की वापसी के बाद समीकरण तेजी से बदले हैं। आलाकमान के व्यवहार से आहत अमरेंद्र सिंह ने कांग्रेस को सबक सिखाने के लिए भाजपा और शिरोमणि अकाली दल के बागी

नेताओं द्वारा सुखदेव सिंह ढींढसा के नेतृत्व में गठित अकाली दल (संयुक्त) के साथ गठबंधन कर चुनाव को चतुष्कोणीय बनाने का दांव चला है। बेशक बहुकोणीय चुनावी मुकाबले में हार-जीत का अंतर बहुत कम रह जायेगा, जिसका प्रभाव किसी एक दल तक सीमित नहीं रहेगा, लेकिन यह समझना मुश्किल नहीं होना चाहिए कि अनुभवी कप्तान की व्यूह रचना के निशाने पर मुख्यत¬ कांग्रेस ही रहेगी, जिससे भारत को मुक्त करना भाजपा का घोषित लक्ष्य भी है। भले ही उनके नवगठित दल का नाम पंजाब लोक कांग्रेस हो, पर यह तो खुला रहस्य है कि अमरेंद्र सिंह अब पंजाब में भाजपाई रणनीति के ही कप्तान हैं। जब सभी के निशाने पर कांग्रेस है, तो त्रिशंकु विधानसभा की तस्वीर उभरने पर कांग्रेस विरोधी नये सत्ता समीकरण बनने की संभावना से भी इनकार नहीं किया जा सकता। वर्ष 2022 में तय हो जायेगा कि अमरेंद्र सिंह भाजपा के लिए हेमंत विस्वा शर्मा साबित होंगे या फिर चिराग पासवान। किसान आंदोलन की सफलता को चुनाव में भुनाने चले बलबीर सिंह राजेवाल और गुरनाम सिंह चढ़ूनी जैसे लोग जिसका भी खेल बिगाड़ें, इससे किसान आंदोलन की साख को पहुंचनेवाली ठेस की भरपाई मुश्किल होगी।

पंजाब की सत्ता जाने से कम झटका कांग्रेस के लिए उत्तराखंड में सत्ता हासिल न कर पाना भी नहीं होगा। राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव का पिछला अनुभव बताता है कि अगर मुकाबला सीधा हो तो भाजपा के विकल्प के रूप में कांग्रेस की स्वीकार्यता अभी भी है। उत्तराखंड का इतिहास भी हर चुनाव में सरकार बदलने का रहा है। पिछले साल चंद महीनों में तीन मुख्यमंत्री बदलना उत्तराखंड की बाबत भाजपा की बेचैनी को ही दर्शाता है, लेकिन हरीश रावत विरोधी गुट की सक्रियता तथा इस बार आप द्वारा भी चुनावी ताल ठोंकना कांग्रेस की चुनावी संभावनाओं को ग्रहण लगा सकता है। बेशक उत्तराखंड छोटा-सा पहाड़ी राज्य है, सांसद-संख्या की दृष्टि से जिसकी राष्ट्रीय राजनीति में ज्यादा बड़ी भूमिका नहीं है, लेकिन वहां सत्ता हासिल न कर पाने का संदेश कांग्रेस के लिए बेहद नकारात्मक साबित होगा, क्योंकि दो अन्य छोटे राज्यों- गोवा और मणिपुर में भी उसके विरुद्ध जबर्दस्त घेराबंदी की जा रही है। यह जानना दिलचस्प होगा कि पिछले विधानसभा चुनाव में गोवा में कांग्रेस सबसे बड़े दल के रूप में उभरी थी, लेकिन उसकी सुस्ती का लाभ उठा कर भाजपा ने वहां सरकार बना ली। फिर इस बार तो वहां न सिर्फ आप ताल ठोंक रही है, बल्कि कांग्रेसियों को तोड़कर तृणमूल भी सत्ता की दावेदार बनने की फिराक में है।

उत्तर प्रदेश में कांग्रेस दशकों से हाशिये पर है। तर्क दिया जा सकता है कि वहां उसका बहुत कुछ दांव पर नहीं है, लेकिन भावी राष्ट्रीय राजनीति में ताल ठोंकने का इरादा रखनेवाला कोई भी दल उत्तर प्रदेश को नजरअंदाज कर आत्मघात ही करेगा। यही कारण है कि मुख्य विपक्षी दल सपा द्वारा गठबंधन से इनकार कर दिये जाने के बाद प्रियंका गांधी कांग्रेस के आक्रामक अभियान का आर-पार के अंदाज में नेतृत्व कर रही हैं। महिलाओं को 40 प्रतिशत विधानसभा टिकट समेत हर संभव दांव आजमाये जा रहे हैं- कांग्रेस की चुनावी किस्मत बदलने के लिए। विधानसभा चुनाव में सपा-बसपा के वर्चस्व के बावजूद 2009 तक लोकसभा चुनाव में कांग्रेस को सम्मानजनक सीटें मिल जाती थीं, लेकिन 2014 में मोदी लहर के बाद से वह पूरी तरह हाशिये पर है। अमेठी ने तो पिछले लोकसभा चुनाव में राहुल गांधी से मुंह फेर लिया, अब विधानसभा चुनाव में उत्तर प्रदेश में प्रियंका का डंका कितना बज पायेगा—इस पर प्रियंका ही नहीं, कांग्रेस का राजनीतिक भविष्य भी निर्भर करेगा। संभावित भाजपा विरोधी राष्ट्रीय गठबंधन में भी कांग्रेस की हैसियत इसी बात पर निर्भर करेगी कि पंजाब, राजस्थान और छत्तीसगढ़ में सत्ता बचाते हुए वह उत्तर प्रदेश-बिहार जैसे बड़े राज्यों में अपना खोया जनाधार किस हद तक वापस पा सकती है।

आज का राशिफल

मेष : दिन के प्रारंभ में आप मानसिक दुविधाओं में खोए रहेंगे। अन्य लोगों के साथ आप जिद्दी व्यवहार छोड़ देंगे और समाधानकारी व्यवहार अपनाएंगे। **वृष :** आपका आज का दिन मध्यमफलदायी रहेगा, दिवस के प्रारंभ में आपको शारीरिक तथा मानसिक रूप से स्फूर्ति और आनंद का अनुभव होगा। आपकी सर्जनात्मक तथा कलात्मक शक्तियों में वृद्धि हो सकती है। **मिथुन :** आपका आज का दिन मिश्र फलदायी रहेगा, । आज आप चिंता से घिरे रहेंगे और शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा। परिवार में भी मतभेद रहेगा, परंतु मध्याह्न के बाद आप सभी कार्यों में अनुकूलता का अनुभव करेंगे। **कर्क :** आपका दिन प्रात:काल में पारिवारिक तथा व्यावसायिक क्षेत्र में लाभदायी है। स्त्रीवर्ग से लाभ होने के भी योग हैं। किसी प्रिय से भेंट होगी। मानसिक तथा शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, परंतु मध्याह्न के बाद आपके मन में विविध प्रकार की चिंताएं उठेंगी, जो कि पारिवारिक वातावरण को बिगाड़ सकती हैं। **सिंह :** आज का दिन आनंदपूर्वक बीतेगा, व्यवसाय और व्यापार करनेवालों के लिए आज का दिन लाभदायी है। व्यापार में वृद्धि होगी। परिवारजनों तथा मित्रों के साथ आनंदपूर्वक पलों को मनाएंगे। **कन्या :** नए कार्य का प्रारंभ करने के लिए समय अनुकूल है। आज आपके भीतर कुछ अधिक धार्मिकता रहेगी। कार्यालय या व्यावसायिक स्थल पर कार्यभार अधिक रहेगा। विदेश जाने के इच्छुक लोगों के लिए अवसर उपस्थित होने की संभावना है। मध्याह्न के बाद नए कार्य का आयोजन कर सकेंगे। अपूर्ण कार्य पूर्णता की दिशा में आगे बढ़ेंगे। व्यवसाय में बढ़ोतरी की संभावनाएं हैं। गृहस्थ जीवन में मधुरता छाई रहेगी। मान-सम्मान मिलेगा। **तुला :** खान-पान में आज विशेष ध्यान रखने के लिए गणेशजी सूचन करते हैं। दिन के दौरान नए कार्य का प्रारंभ करने के लिए समय अनुकूल नहीं है। अधिक कार्य से शिथिलता और मानसिक व्यग्रता का अनुभव आप करेंगे। प्रवास लाभदायी नहीं है, परंतु मध्याह्न के बाद आपको कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी। **वृश्चिक :** आप आज दांपत्यजीवन को विशेष रूप से मना सकेंगे और उसके सुख का भी अनुभव कर सकेंगे। परिवारजनों के साथ सामाजिक समारोह में शामिल होंगे। छोटे से प्रवास का भी योग है। मध्याह्न के बाद आपका स्वास्थ्य बिगड़ने की संभावना है। मानसिक रूप से कुछ व्यग्रता का भी अनुभव करेंगे। मध्याह्न के बाद नए कार्य का प्रारंभ न करिएगा। **धनु :** आज का दिन शुभफलदायी होगा, । शरीर और मन से अस्वस्थ रहते हुए भी आप अपने अपूर्ण कार्यों को पूर्ण कर सकेंगे। आर्थिक आयोजन भी बहुत अच्छी तरह से कर सकेंगे। कार्यालय में सहकर्मचारियों का सहयोग आपको मिलेगा। परिवारजन और मित्रों की घनिष्ठता में वृद्धि होगी। दांपत्यजीवन आनंददायी रहेगा। **मकर :** वैचारिक स्तर पर विशालता और मधुरवाणी से आप अन्य जनों को प्रभावित कर सकेंगे, वाणी की मधुरता आपको नए संबंध बनाने में भी काम आएगी। आर्थिक आयोजन भी आज आप अच्छी तरह से कर सकेंगे। आज का पूरा दिन आनंद के साथ बीतेगा। नौकरी में